M.A. SEM2 Paper 5

मैथिली शरण गुप्त और राष्ट्रीय काव्यधारा —

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त 1886 को झाँसी के चिरगाँव में हुआ था। गुप्त जी खड़ी बोली के महत्त्वपूर्ण कवि हैं। ये कबीरदास के भक्त थे। पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी जी से प्रेरणा पाकर इन्होंने खड़ी बोली को अपनी रचना का माध्यम बनाया। इन्होंने अपनी रचना में राष्ट्रीयता, सामाजिक रुचि एवं नैतिक मूल्यों पर बल दिया है पर मुख्य रूप से इन्होंने राष्ट्रीयता पर ही बल दिया है। पहले कविताएँ कहानियाँ सिर्फ मनोरंजन के लिए लिखी जाती थी पर इन्होंने साफ साफ कह दिया कि —

"केवल न मनोरंजन कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।"

गुप्त जी की राष्ट्रीय चेतना 'भारत-भारती' में पूर्णतः मुखरित हुई है। उन्होंने देशवासियों को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्ति पाने का संदेश देते हुए कहा है —

शासन किसी परजाति का चाहे विवेक विशिष्ट हो।
सम्भव नहीं है किन्तु जो सर्वांश में वह इष्ट हो॥"

गुप्त जी ने लगभग 40 कृतियाँ लिखीं जिनमें प्रमुख हैं —

1. जयद्रथ वध (1910ई०)
2. भारत-भारती (1912ई०)
3. पंचवटी (1925ई०)
4. झंकार (1929ई०)
5. साकेत (1931ई०)
6. यशोधरा (1932ई०)
7. द्वापर (1936ई०)
8. जयभारत (1952ई०)
9. विष्णुप्रिया (1957ई०)

उन्होंने तीन नाटक भी लिखे हैं - ① तिलोत्तमा ② चन्द्रहास ③ अनघ।

मैथिली शरण गुप्त रामभक्त कवि थे। राम कथा को आधार मानकर उन्होंने 'साकेत' की रचना की। साकेत के नवम सर्ग में रामकथा की उपेक्षित पात्र उर्मिला का विरह वर्णन के मार्मिक रूप दिखता है। गुप्त जी ने समाज में नारी की महत्ता का प्रतिपादन किया। नारी की विवशता का प्रतिपादन 'यशोधरा' में वे इन शब्दों में करते हैं —

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध और आंखों में पानी॥"

राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवियों में द्विवेदी युग में नाथुराम शर्मा 'शंकर', गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही', राम नरेश त्रिपाठी, राय देवी प्रसाद पूर्ण, रामचरित उपाध्याय आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय है। नाथू राम शर्मा 'शंकर' की निम्न पंक्तियों में देश के लिए बलिदान की प्रेरणा दी गयी है —

"देशभक्त वीरों मरने से नेक नहीं डरना होगा।
प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा॥"

राम नरेश त्रिपाठी ने स्वदेश प्रेम की भावना जाग्रत करते हुए देशवासियों को देश पर प्राण न्योछावर करने का संदेश निम्न पंक्तियों में दिया —

"सच्चा प्रेम वही है जिसकी तृप्ति आत्मबलि पर हो निर्भर।
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है करो प्रेम पर प्राण निछावर॥
देश प्रेम वह पुण्य क्षेत्र है अमल असीम त्याग से विलसित।
आत्मा के विकास से जिसमें मनुष्यता होती है विकसित॥

गया प्रसाद शुक्ल 'स्नेही' की कविताओं में भी देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता का स्वर विद्यमान है —
"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नर पशु निरा है और मृतक समान है।।"
राष्ट्रप्रेम की यह भावना तत्कालीन विदेशी शासन के विरुद्ध एक संग्राम का सूत्रपात करने का प्रयास थी, ~~शायद~~ इसी कारण सरकार ने 'भारत-भारती' को जब्त कर लिया। शुक्ल जी ने मातृभूमि में ही प्रभु के दर्शन किए हैं। वे प्रजातंत्र को देश के लिए उचित तो मानते हैं पर यह भी जानते हैं कि लोग इस शासन व्यवस्था के कई दोषों से त्रस्त हैं। स्वार्थपरता, भ्रष्टाचार, परिवारवाद का बोलबाला होने पर शुक्ल जी ने लिखा है —
"स्वयं श्रेष्ठ को चुन लेने में लोक आज असमर्थ।
आस-पास के स्वार्थी तक ही लोगों के व्यापार।।"
सारत: निःसंदेह कहा जा सकता है कि गुप्त जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीयता के भावों को जन-जन के हृदय में भरने का काम किया है। राष्ट्रीयता पोषक विचारों के कारण ही सन 1936 में महात्मा गाँधी ने उन्हें काशी में 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से विभूषित किया। यूँ तो राष्ट्रीय काव्य धारा में कई कवियों ने अपना उत्कृष्ट योगदान दिया पर मैथिली शरण गुप्त की राष्ट्रीयता से ओत प्रोत रचना अविस्मरणीय है।